thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 30 7 से 13 अगस्त, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 श्रा. शु. 11

वेद की शिक्षाओं के अभाव में सर्वोन्नति का पथ प्रशस्त नहीं हो सकता

– स्वामी आर्यवेश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आर्य समाज संगठित होकर कार्य करे

– पं. माया प्रकाश त्यागी

शामली में हुआ स्वामी आर्यवेश जी का भव्य अभिनन्दन

आज दिनांक 3 अगस्त, 2014 (रविवार) को आर्य समाज शामली (उ. प्र.) में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। अवसर था युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित किये जाने तथा पं. माया प्रकाश त्यागी को सार्वदेशिक सभा का कोषाध्यक्ष नियुक्त किये जाने के कारण प्रसन्नता प्रकट किये जाने का। इस अवसर पर उत्साह से भरा हुआ भारी जन समूह उपस्थित था। इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज शामली तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् शामली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों द्वारा हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया। सर्वप्रथम जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा शामली के प्रधान श्री रघुवीर सिंह जी एवं मंत्री श्री पूर्णचन्द्र आर्य, आर्य सामज शामली के प्रधान श्री राजपाल एवं मन्त्री श्री दिनेश चन्द्र आर्य, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश आर्य, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने शॉल उढ़ाकर तथा पुष्पमाला पहनाकर स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत तथा अभिनन्दन किया तथा उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप प्रदान किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (उ. प्र.) के प्रभारी श्री रामकुमार आर्य, स्त्री आर्य समाज शामली की ओर से श्रीमती पूनम आर्या मंत्राणी व हेमलता आर्या प्रधाना, नीलम आर्या पूर्व मंत्राणी, श्री प्रमोद चौधरी गाजियाबाद व श्री वृजेन्द्र आर्य, श्री प्रवीण आर्य महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, उ. प्र., आचार्य रणवीर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज कैराना, श्री धर्मवीर वर्मा, श्री विश्वदेव परमार, श्री महेन्द्र भाई सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी आर्यवेश जी का पुष्पहार पहना कर सम्मान तथा अभिनन्दन किया।

समारोह में वर्तमान में क्षेत्र के सांसद डॉ. संजीव बालान के पिताश्री डॉ. सुरेन्द्र सिंह का भी स्वागत किया गया। पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनन्द प्रकाश एवं संयोजन श्री सुशील आर्य ने किया।

इस अवसर पर अपने धन्यवाद उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जनसमूह तथा आयोजकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपकी भारी संख्या में उपस्थिति, उत्साह और मेरे प्रति विश्वास को देखकर मेरा उत्साह दोगुना हो गया है। स्वयं सुधरना और दूसरों को सुधारना आर्य का कर्त्तव्य होता है आर्य समाज की स्थापना इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर की गई थी। यज्ञ, संध्या स्वाध्याय, सत्संग, प्रवचन सम्मेलन करना इन सबका एक ही उद्देश्य है सुधार करना। महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज एक ऐसा संगठन है जो वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है। लेकिन आर्य समाज आज फूट का शिकार है और इस फूट के कारण ही आर्य समाज आशा के अनुरूप अपना प्रभाव नहीं छोड़ पा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है **कि आपस की फूट के कारण कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, लेकिन अब तक वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह महा भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा।** महर्षि दयानन्द के इस वाक्य में कितनी पीड़ा है इसको हर निष्ठावान आर्य अनुभव कर सकता है। मैं चाहता हूँ कि आज आर्य समाज में व्याप्त यह विघटन शीघ्र दूर हो और इसके लिए हर सम्भव प्रयास करने के लिए मैं कृत संकल्पित हूँ इस कार्य में आप सबका सहयोग भी अपेक्षित है। आप सब पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ आर्य समाज का कार्य करें और अपने-अपने स्तर पर इस गतिरोध को समाप्त करने के लिए प्रयास करें। स्वामी जी ने कहा कि हम देश में एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते हैं जो सामाजिक समरसता, साम्प्रदायिक सौहार्द और मानवीय एकात्मकता का आदर्श स्थापित करे।

शेष पृष्ठ 7 पर

दानी महानुभावों की सेवा में विनम्र अपील

मन्यवर महोदय,

जैसा कि आपको विदित है कि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" विश्व की आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था है। ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने, संगठन को मजबूत करने तथा विभिन्न सामाजिक बुराइयों, धार्मिक पाखण्डों तथा समय-समय पर मिलने वाली चुनौतियों का सामना करना एवं सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक समस्याओं पर समाधान प्रस्तुत करना तथा आर्य समाज के दस नियमों के अनुरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान मिशन को हर दृष्टि व हर स्तर पर सुदृढ़, गतिशील, प्रभावी और सफल बनाना सार्वदेशिक सभा का मुख्य कार्य है। लेकिन किसी भी कार्य को करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। विभिन्न कारणों से सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं कही जा सकती। हमने सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनते ही आर्य समाज के आधार वेदों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। आर्य समाज को गतिशील करने के लिए विभिन्न योजनायें तैयार कर ली गई हैं और उन पर कार्य भी प्रारम्भ हो गया है। सभा भवन जो 3/5 आसफ अली रोड पर स्थित है उसकी भी दशा अच्छी नहीं है उसका भी जीर्णोद्धार करना हमारी प्राथमिकता में है इसके अतिरिक्त सभा को चलाने के लिए जो प्राथमिक आवश्यकताएं हैं उनकी पूर्ति में भी अत्यन्त कठिनाई अनुभव हो रही है। अतः मैं आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ताओं, दानी महानुभावों से विनम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि आप सब अपना अमूल्य सहयोग सभा को प्रदान करें जिससे आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाया जा सके।

वेदों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। हमने पहली आवृत्ति में 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने का संकल्प लिया है यह बहुत बड़ा कार्य है और इसमें भी आपका सहयोग अपेक्षित है। आर्य समाज के विचारों, मान्यताओं और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों की जानकारी देने के लिए वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका निरन्तर प्रकाशित की जा रही है तथा सार्वदेशिक सभा से जुड़े विभिन्न सेवा प्रकल्प भी अवाध गति से चलाये जा रहे हैं।

यह सब मेरे लिए चुनौती भरे कार्य हैं और यह सब पारस्परिक आर्थिक सहयोग के बिना पूर्ण नहीं हो सकते हैं। संगठन को गतिशील बनाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता केवल और केवल आर्य समाज और महर्षि दयानन्द में होनी चाहिए और यही आर्य समाज की मांग है। मेरा सभी दानी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि वे दिल खोलकर सार्वदेशिक सभा को अपना सहयोग प्रदान करें मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपका दिया हुआ एक-एक पैसा आर्य समाज को उन्नत करने में लगाया जायेगा। आप अपना सहयोग "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम चैक/ड्राफ्ट, धनादेश के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अविलम्ब भिजवाने की कृपा करें।

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

सुधार के दो साधन ब्रह्म शक्ति व क्षात्र-शक्ति

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

हर सुधार के दो मुख्य कारण हैं। एक ब्रह्म-शक्ति और दूसरी क्षात्र-शक्ति। अर्थात् जब ब्राह्मण विद्वान् बुरे आचार व्यवहार के दोषों का विस्तार से तथा स्पष्ट रूप से खण्डन करते हैं और उनके उपदेशों का लोगों पर प्रभाव पड़ता है तथा वे सामाजिक अनाचार को छोड़ने के लिए स्वयं उद्यत हो जाते हैं तो एक प्रकार का सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है जिसमें लोगों को अनाचार करने का साहस ही नहीं होता। फिर भी कुछ ऐसे मनचले होते हैं जिनमें नियमोल्लंघन की प्रवृत्तियाँ होती हैं वे समाज मत की परवाह नहीं करते। उनकी लाठी किसी के माल को छीनने के लिए तैयार रहती है। वे कहा करते हैं कि हम किसी से नहीं डरते। देखें हमारा कोई क्या करेगा?ऐसे लोग बहुत दूषित प्रथाओं को जीवित रखने में सहायता देते हैं। इनके लिए क्षात्र शक्ति अर्थात् सुदृढ़ शासक (राजा) की आवश्यकता होती है कि वह दूसरे लोगों को ऐसे आततायियों के प्रभाव से बचा सकें। इस प्रकार ब्राह्मण और राजा दोनों मिलकर सुधार का काम करते हैं।

भारत के भीषण महायुद्ध के पश्चात् इन दोनों शक्तियों का लगभग नाश हो गया। जो ब्राह्मण शेष रहे वे राजाओं के मुंह ताकते रहते थे। राजे तो 'अन्नदाता' कहलाते थे। जो 'अन्न' के दाता थे वे 'मन' के भी दाता थे। जैसा खाये अन्न, वैसा बने 'मन'। दरिद्र के विचार भी दरिद्र हो जाते हैं। ब्राह्मण विद्वान् शास्त्रों की भी ऐसी व्याख्या कर देते थे कि राजे लोग खुश हो जायें। जब राजों में बहु-पत्नी विवाह की प्रथा पड़ी अर्थात् जब राजे अपनी इन्द्रियों को वश में न रख सकें तो ब्राह्मणों ने शास्त्रों के उपदेशों की भी वैसी ही व्याख्या कर दी, जिसमें राजा साहब को अपनी इच्छापूर्ति का अवसर मिल सके।

यहां हम एक वर्तमान युग के रजा साहब का उल्लेख करते हैं। राजा साहब को शराब पीने की बुरी लत थी। वे शराब के बिना दो घण्टे भी नहीं रह सकते थे। उनके मन में आया कि एकादशी का उपवास रखना चाहिए। परन्तु एकादशी का व्रत और मद्यपान यह तो दो परस्पर विरोधी काम थे। उनका समन्वय कैसे होगा?एक दिन राजा साहब ने पक्का इरादा कर लिया कि व्रत रखेंगे और शराब न पियेंगे। किसी प्रकार दोपहर तक तो काट लिया, जब तीसरा पहर आया तो शराब न पीना उनकी शक्ति से बाहर की बात हो गई, और वे घबराने लगे। अब किया भी क्या जाये?शराब पीते है। तो व्रत का फल नष्ट हो जाता है। नहीं पीते तो जान की जोखों है। अन्त में पुरोहित जी ने आते ही समस्या को सरल कर दिया। **''महाराज! थोड़ी सी शराब पी लें परन्तु उसमें कुछ बूंदें गंगाजल की डाल लें।''**

पण्डितों को ऐसे चुटकुले बहुत आते थे। यदि किसी राजा का मन किसी सुन्दरी पर लट्टू हो गया तो पण्डित जी कहते - ''महाराज! यज्ञ के एक यूप में कई गायें बंध सकती हैं परन्तु एक गाय को कई यूपों में नहीं बांध सकते। इसलिए एक पुरुष कई पत्नियों से विवाह कर सकता है परन्तु एक स्त्री कई पति नहीं कर सकती।

महाराजा दशरथ भी इसी प्रकार की किसी युक्ति का शिकार हुए होंगे अन्यथा वे कैकेयी से विवाह करके अपनी मृत्यु का स्वयं साधन न बनते।

हम दूसरे मतों तथा देशों में भी ऐसा ही पाते हैं।

इंग्लैंड का राजा था अष्टम हेनरी। उसका बड़ा भाई मर गया था। उसकी स्त्री थी हस्पानियां देश के आरगन प्रदेश के राजा की कन्या कैथरायन। ईसाई धर्म के विधान के अनुसार बड़े भाई की विधवा से विवाह करना निषिद्ध है। परन्तु जब हेनरी सप्तम ने यह इच्छा की कि उसके राजकुमार हेनरी का विवाह उसके बड़े भाई की विधवा से हो जाये तो रोम के पोप से आज्ञा मांगी गई। पोप ने आज्ञा दे दी और कैथरायन अपने देवर हेनरी की वैधानिक पत्नी बन गई, उसका पति (अष्टम हेनरी) के नाम से इंग्लैंड की गद्दी पर बैठा। कैथरायन से एक पुत्री भी उत्पन्न हुई जिसका नाम था मेरी या मेरी ट्यूर। परन्तु मनचले बादशाह का मन एक दिन महाराणी की एक अनुचरी पर आसक्त हो गया। बहुविवाह विधान के विरुद्ध था। किया जाये तो क्या?पादरियों की शरण ली गई। खुशामदी पण्डितों, खुशामदी मौलवियों और खुशामदी पादरियों की न तो हिन्दुओं में कमी है, न मुसलमानों में, न ईसाइयों में। पादरियों ने अकल दौड़ाई और यह निर्णय किया कि बादशाह की पहली शादी काननू के विरुद्ध थी। इसलिए पोप महादेय के हस्तक्षेप के होते हुए भी कैथरायन को तलाक दे दी गई और दूसरी महाराणी जी आ विराजमान हुई।

इसीलिए मैंने ऊपर कहा है कि सुधार के लिए सुदृढ़ ब्राह्मणों और सुदृढ़ क्षत्रियों को आवश्यकता है।

मैंने 1945 में शहपुराधीश जी के पुस्तकालय में एक पुस्तिका देखी, जिसमें हिन्दू शास्त्रों से बहुत से श्लोक और सूत्र मांस-भक्षण के पक्ष में उद्धृत किये गये थे। पुस्तक बहुत छोटी थी और लेखक की योग्यता की भी परिचायक न थी परन्तु उस पर पांच सौ (500) का पारितोषिक लेखक को दिया गया था। यह पुस्तक शायद आर्य समाज के उस युग में लिखी गई थी जब आर्य समाज की दो पार्टियाँ हो गई थीं।

महाभारत के बहुत दिनों बाद तक यद्यपि ब्राह्मण शक्ति और क्षत्रिय शक्ति बहुत निर्बल हो गई थीं और न कोई उपदेष्टा ब्राह्मण रहा न कोई दण्ड देने वाला क्षत्रिय तथापि राजा और प्रजा का धर्म तो एक ही था और उनके शास्त्र भी एक थे।

परन्तु जब ईसाई और मुसलमान आये तो सुधार का काम और कठिन हो गया। शासकों ने हिन्दू धर्म की कुप्रथाओं को धर्म परिवर्तन का एक साधन बना लिया और उन कुप्रथाओं को दूर करने की इसलिए कोशिश की कि लोग उन बुराइयों के दोषों को समझकर धर्म परिवर्तन कर लें (अर्थात् ईसाई या मुसलमान हो जायें।) प्रजा ने इसका विरोध किया कि किसी विधर्मी को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है।

स्वामी दयानन्द का सुधार कार्य केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। संसार का उपकार करना अर्थात् आध्यात्मिक, शारीरिक, आचार तथा अर्थ सम्बन्धी उन्नति करना उसका ध्येय है।

राजा राममाहेन राय ने 'सती' की दूषित प्रथा को जो घोर निर्दयता पूर्ण थी, ईसाई मिशनरियों की सहायता से रुकवाया था, अत: ब्राह्मणों ने बहुत विरोध किया। उनका कहना था कि ईसाई शासकों को हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके बहुत दिनों पश्चात् श्री रमेशचन्द्र दत्त (आर. सी. दत्त) ने ऋग्वेद के अध्ययन से यह सिद्ध किया कि जिस वेद मन्त्र के आधार पर ''सती प्रथा'' (मृत पति के साथ जीवित पत्नी का दाह करना) वेद विहित बताई जाती है उसके पढ़ने में गलती हुई है। 'अग्रे' शब्द (एकार) के स्थान में 'अग्ने' (अकार) पढ़ लिया गया है, अस्तु। यह एक अलग विषय है।

हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि जब राजा और प्रजा के धर्म भिन्न-भिन्न होते हैं और धार्मिक संस्थाएं भी अलग-अलग होती हैं तो सुधार बहुत कठिन हो जाता है।

स्वामी दयानन्द के समय में यही कठिनाई थी। शासक ईसाई और प्रजा हिन्दू। जब बाल विवाह के विरुद्ध आवाज उठी तो पण्डित लोग चिल्लाये कि गवर्नमेंट को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने या हिन्दू ला (कानून) के बदलने का कोई अधिकार नहीं।

प्राय: छोटी लड़कियों का विवाह युवा (बड़ी आयु वालों) लोगों के साथ हो जाता था। दस या नौ साल की लड़की गृहस्थ धर्म पालन का भार नहीं उठा सकती थी। तब हिन्दू ललनाओं का जीवन संकट में था। उसके विरुद्ध सरकार की ओर से कानून बनाया गया, तब महात्मा तिलक जैसे सर्वोत्तम (संभ्रान्त) लोगों ने भी इसका विरोध किया। युक्ति वही थी कि ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं।

स्वामी दयानन्द ने इस समस्या का एक नया समाधान निकाला, कि यदि कोई प्रथा वैदिक शास्त्रों के विरुद्ध है तो या तो पण्डित लोग इसका सुधार अपने हाथ में लें, अन्यथा हम इस दूषित प्रथा को बन्द करने में सरकार की सहायता लेने में संकोच न करेंगे।

सन् 1856 ई. में ईसाई शासन की सहायता से श्री पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से विधवा पुनर्विवाह का कानून पास हो गया परन्तु यह कानून अलमारियों में पड़ा सड़ता रहा। जब इस प्रश्न को आर्य समाज ने अपने हाथ में लिया तो देश की काया पलट दी।

आर्यसमाजियों का कहना है कि हम यह स्वीकार करते हैं कि सुधार का मुख्य कर्त्तव्य तो ब्राह्मणों का है, सर्वसाधारण की मनोवृत्ति को यही बदल सकते हैं परन्तु यदि ब्राह्मण मन्द हो जायें या लकीर के फकीर हो जायें या स्वयं सुधार का उत्तरदायित्व अपने सिर पर न लें तो कुमार्ग पर चलती हुई पथभ्रष्ट जनता को उसके भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिए। सरकार की सहायता भी लेनी चाहिए।

उद्देश्य है सुधार! सुधार में दोनों शक्तियों अर्थात् ब्रह्म-शक्ति और क्षात्रशक्ति की आवश्यकता है। आर्य समाज ने कई बार सुधार के विषय में सरकार से मदद ली है।

बाल-विवाह के विरुद्ध कानून पास कराने का श्रेय है श्री हरविलास शारदा को जो आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित नेता थे, और जिनके नाम पर इस कानून को शारदा एक्ट कहते हैं।

जन्म -मूलक जाति-पांति तोड़कर विवाह करने के सम्बन्ध में जो एक्ट (कानून) पास हुआ और जिसको आर्य समाज विवाह एक्ट कहते हैं उसको पास कराने वाले श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त थे जो 40 वर्ष से अधिक समय से अब तक आर्य समाज का नेतृत्व कर रहे हैं।

स्वामी दयानन्द का सुधार कार्य केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। संसार का उपकार करना अर्थात् आध्यात्मिक, शारीरिक, आचार तथा अर्थ सम्बन्धी उन्नति करना उसका ध्येय है।

महाभारत के पश्चात् इन पांच हजार सालों में जो बुराइयां भारतवर्ष या दूसरे देशों में फैल गईं और जिनके कारण समस्त मानव जाति असत्य मार्ग पर चल पड़ी उन बुराइयों को दूर करने का प्रोग्राम स्वामी दयानन्द ने संसार के समक्ष रखा है। यदि आर्य समाज के लोग श्रद्धा, सुदृढ़ गति और ऋजुता के साथ आगे बढ़ेंगे तो पक्की आशा है कि हम वैदिक धर्म के उस युग को ला सकें जो महाभारत से बहुत पूर्व विद्यमान था।

यही आस अटक्यो रहे, अलि गुलाब के मूल।
अथि है बहुरि वसन्त ऋतु, इन डारन बहु फूल॥

शोक समाचार

सार्वदेशिक सभा के कर्मचारी श्री जयनारायण शर्मा के चाचा जी श्री हरचरन शर्मा का 3 अगस्त को सुबह 6 बजे देहान्त हो गया। सायं 6 बजे वैदिक रीति से अंतिम संस्कार उनके जन्म स्थान गांव-गढ़ी सूरजमल, डा.-खण्डेहा, जिला-अलीगढ़ में किया गया। वह 72 वर्ष के थे और पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका उपचार कैलाश अस्पताल नोएडा में 10-12 दिन चला था जिससे स्वास्थ्य लाभ मिल गया था और अस्पताल से घर पहुंच गये थे परन्तु अचानक पुन: स्वास्थ्य फिर खराब हो गया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। वह अपने पीछे पत्नी, 5 बेटियां एवं एक पुत्र शादीशुदा व दूसरा पुत्र बगैर शादी भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

शांति यज्ञ (उनकी स्मृति में) का आयोजन पैतृक गांव में 15 अगस्त, 2014 को सुबह 10.00 रखा गया है। सार्वदेशिक सभा परिवार दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करने की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

thearyasamaj.org

हिन्दुत्व की ठेकेदारी

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

...गतांक से आगे

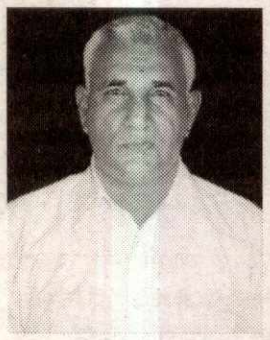

(छ) साईं पूजा यदि संक्रामक रोग है और उससे हिन्दू विभाजित होगा तो इसकी चिन्ता तब क्यों नहीं की गई जब सनातन धर्म ने वैदिक धर्म से अलग सम्प्रदाय के रूप में अपना अस्तित्व स्थापित किया था और बजाय आर्य के अपने को हिन्दू कहलवाना शुरू किया था। कबीर, नानक, दयानन्द ने मूलधारा से जुड़ने का प्रयास किया तो सनातन धर्म ने उनका कितना सहयोग किया?हिन्दू जाति में विभाजन का संक्रामक रोग स्वयं सनातन धर्म ने पैदा किया। इसी का परिणाम था कि यहाँ बौद्ध, जैन आदि सैकड़ों सम्प्रदायों का जन्म हुआ। इस्लाम और ईसाइयत के आगमन पर हजारों हिन्दुओं ने प्रलोभन, भय अथवा स्वेच्छा से अपने पितृ धर्म का परित्याग किया। हमारा केन्द्रीय प्रतिष्ठान वेद है, इससे हम जितना दूर जायेंगे विभाजन के संक्रामक रोग को बढ़ायेंगे। जरूरत वेद के असल आशय को समझने और अपनाने की है न कि येन-केन-प्रकारेण अपने दुराग्रहों की पुष्टि वेद से करने की है जैसा कि अब तक होता रहा है। वेद के आलोक में ही सम्प्रदायों का उन्मूलन सम्भव है, पाखण्ड और अन्धविश्वास का उन्मूलन सम्भव है और जिसे आज विश्वास, श्रद्धा, आस्था मान अर्घ्य दिया जा रहा है उसका उन्मूलन सम्भव है। वेद के आलोक में ही हम समझ सकते हैं कि अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण, तीर्थाटन, परिक्रमा, कांवड़, कुम्भ-स्नान, बलि आदि प्रथाएं सनातन धर्म का अंग कभी नहीं रही हैं बल्कि पुराण आरोपित हैं। पुराणों के कारण ही भारत में गुरुडम स्थापित हुआ है, अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास का विस्तार हुआ है। भारत में ऋषियों की परम्परा रही है साधु, संतों, मठाधीशों की नहीं जो गुरुडम को फैला रहे हैं, अपने को ईश्वरीय अंश कहलवाकर पूजित हो रहे हैं।

(ज) साईं हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक यदि नहीं हैं तो इस एकता के लिए खुद शंकराचार्य जी और उनके सनातन धर्म ने क्या किया?राम मन्दिर बनाम बाबरी मस्जिद काण्ड पर जो कोहराम हुआ क्या उससे इस एकता का बीज वपन हुआ?कश्मीर से पांच लाख कश्मीरी ब्राह्मणों का पलायन हुआ क्या उससे हिन्दू समाज एकजुट हुआ, गोरक्षण के मामले में क्या हिन्दू एकजुट हैं, हिन्दी के नाम पर क्या वह एकजुट हैं?जब हिन्दु खुद कहीं एकजुट नहीं है तो हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात तो दूर की कौड़ी है। पहले हिन्दू को एकजुट करने का प्रयास होना चाहिए जो विविध सम्प्रदायों, भाषाओं, क्षेत्रीयताओं का शिकार होकर विभाजित है। यह एकजुटता आर्यत्व ग्रहण करके, वैदिक परम्परा को अपनाकर ही सहज सम्भव है। वेदों का आलोक फैलेगा तो इस्लाम व ईसाइयत का दम भी यहाँ फूलने लगेगा।

साईं के माध्यम से हिन्दू मुस्लिम एकता कैसे सम्भव होगी जब स्वयं मुसलमान साईं को अपना मानने को तैयार नहीं हैं?बरेलवी और देवबन्दी मुस्लिम उलेमाओं का इस बीच बयान आया है कि साईं बाबा का मुस्लिम होना कहीं भी साबित नहीं होता। बरेली के नबीरे आला हजरत मौलाना मन्नान रज़ा खाँ उर्फ मन्नानी मियाँ ने कहा है कि मुसलमानों का साईं से कोई लेना-देना नहीं है। मौलाना शहाबुद्दीन रजवी, महासचिव आल इंडिया जमात रजा-ए-मुस्तफा ने भी कहा है साईं बाबा का मुसलमानों से कोई मतलब नहीं। साईं हिन्दुओं के रहनुमा थे, मुसलमानों की उनमें कोई दिलचस्पी नहीं। सूफी रईस मियां कादरी, अध्यक्ष आल इंडिया सूफी काउंसिल ने भी कहा है कि साईं बाबा फकीर (संत) थे, कोई भी इंसान भगवान नहीं हो सकता। प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान व अलकुरआन फाउंडेशन के अध्यक्ष मौलाना नदीमुल वाजदी ने कहा है कि कहीं पर भी यह साक्ष्य नहीं कि साईं बाबा मुसलमान थे। मदरसा जामियातुल अनवरिया के मोहतमिम मौलाना नसीम अख्तर शाह कैसर ने भी शंकराचार्य साईं बाबा को मुसलमान कहे जाने पर असहमति जताई है। दारुल उलूम वक्फ के वरिष्ठ उस्ताद मौलाना मुफ्ती मोहम्मद आरिफ कासमी ने भी कहा है कि साईं बाबा का मुस्लिम होना कहीं भी साबित नहीं होता। इस विषय पर इतने मुस्लिम विद्वानों का बयान आना सन्देह पैदा करता है कि भीतर ही भीतर कहीं कुछ पक रहा है, दाल में कुछ काला अवश्य है। साईं बाबा का द्वारिका माई मस्जिद में रहना, मस्जिद पर संतरिया और हरा झंडा लहराना, साईं का कुरआन व नमाज पढ़ना, एक सूफी संत से उसकी गहरी मित्रता जिसकी मजार साईं परिवार में है, दीक्षा में बकरे का मांस देना, क्या ये बातें जो प्रचारित की जा रही हैं, उन्हें मुस्लिम सिद्ध करने में पर्याप्त नहीं है?शिरडी में साईं का जो मन्दिर है वहाँ कब्रें भी बनी हुई हैं। कम से कम कोई हिन्दू ऐसे स्थान का चयन नहीं कर सकता था?उनका खुद का लिवास और मूंछें उन्हें हिन्दू कम व मुस्लिम अधिक सिद्ध करती हैं। अनेक मुसलमान भी साईं-बाबा के मुरीद हैं। साईं बाबा सूफी संत थे और सूफी मत के संचालक प्राय: मुस्लिम ही रहे हैं। साईं बाबा को सूफी संत न मानने का कारण मुसलमानों को साईं की ओर जाने से रोकना है क्योंकि जो खतरा शंकराचार्य जी को सता रहा है वही खतरा मुस्लिम उलेमाओं का भी है। वे नहीं चाहते हिन्दू भीड़ की तरह मुस्लिम भीड़ भी साईं की मुरीद बने और मुस्लिम एकता को खण्डित करे, कुरआन की मान्यता कम हो। सूफी और कट्टर मुसलमानों में हमेशा संघर्ष रहा है, इतिहास इसका साक्षी है। मंसूर और सरमद के साथ जो हुआ उसे कौन भुला सकता है?यदि साईं बाबा विशुद्ध हिन्दू होते तो कदाचित ही कोई मुस्लिम उनका मुरीद बन पाता। साईं बाबा मूलत: मुस्लिम ही प्रतीत होते हैं लेकिन उनकी हिन्दू छवि गढ़ने के प्रयास भी कम नहीं रहे हैं। उन्हें ओम् साईं पुकारना, धीयो यो न साईं प्रयोदयात का उच्चारण करना, उनहें मुकुट धारण कराना, उन्हें सिंहासनरूढ़ कर उनकी आरती उतारना, पूजा अर्चना करना, उन्हें गंगा स्नान कराना, उनको पालकी में बैठाकर जूलूस निकालना आदि प्रयास इसी ओर संकेत करते हैं। यह प्रचार व तन्त्र का युग है अत: किसी व्यक्ति को इसके बल पर कुछ भी बनाया जा सकता है, कुछ भी सिद्ध किया जा सकता है। जमाना लोकतन्त्र का है, निर्णय वोट करता है, अत: भीड़ जिस पक्ष में अधिक होगी सत्य और विजय वहीं होगी। आर्य समाज खूब दहाड़ा लेकिन पाखण्ड, अंधविश्वास, रूढ़ियां, ढोंग खत्म नहीं हुए बढ़ते ही गये, आज भी बढ़ रहे हैं क्योंकि आर्य समाजियों की संख्या कम रही, बढ़ नहीं पाई। शंकराचार्य जी जितना मर्जी चिल्लाएं, आलोचनाएं करें, खण्डन करें, व्यवस्था दें, फतवा दें साईं दरबार में जुटी भीड़ पर इसका कुछ भी असर होने वाला नहीं है। उनकी मुरादें जब साईं दरबार में जाकर पूरी होती हैं अथवा पूरी होंगी तो वे मन्दिर मस्जिद में क्यों जायेंगे?सवाल यहाँ सच्चाई पर फूल चढ़ाने का नहीं है इस विश्वास को पैदा करने, स्थापित करने और उसका दोहन करने का है कि साईं दरबार में जो भी आता है, सच्चे मन से उसकी आराधना करता हैं, उसकी सभी कामनाएं और मन्नतें पूरी होती हैं। प्रचार और तन्त्र के इस युग में इस विश्वास को वही पैदा और स्थापित कर सकता है जिसके पास संसाधन हैं, टेलीविजन पर धारावाहिक प्रसारित कराने अथवा दो-चार फिल्में तैयार करा मार्किट बनाने का सामर्थ्य है। ऐसा करके सवा अरब की जनसंख्या वाले देश में 10-20 लाख लोगों को आकर्षित कर लेना

असम्भव नहीं है। जब राजनेता, शासक और प्रशासक उनके साथ हों सड़क रेलवे लाईन बिछाने को तैयार हों तो भीड़ को खींचना क्या असम्भव रह पाता है?जब 10-20 लाख वहां जुटेंगे तो उनमें से हजार-दो हजार ऐसे भी होंगे जिन्हें अपने कर्मानुसार सकारात्मक फल मिलेगा और वे इसका श्रेय ईश्वर को न देकर, अपने साईं को देना चाहेंगे। यही लोग साईं के कुनबे को बढ़ाने में सहायक होते हैं। उन्हें ही विशेष रूप से सामने लाकर प्रचारित किया जाता है। यह हकीकत अकेले साईं दरबार की नहीं है उन सभी प्रतिष्ठानों की है जहां भीड़ जुटती है। कर्मफल के वैदिक सिद्धान्त के विपरीत साईं कृपा को महत्ता देने का यह दर्शन मूलत: सम्प्रदायों की देन है, सिद्ध पीठों की देन है, सूफी मजारों की देन है। सनातन धर्मी आचार्य भी यही खेल शताब्दियों से खेलते आ रहे हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सिद्ध पुरुष, चमत्कारी पुरुष, वरदान देने वाले, उपकार करने वाले पुरुष होते ही नहीं हैं। लेकिन इतना निश्चित है कि जड़ पदार्थों से, मजार या मूर्तियों से यह सम्भव नहीं है। जीवित सिद्ध पुरुष की शक्ति भी असीम नहीं होती कि लाखों की कामनाएं पूरी कर दे। आशुतोष महाराज और बापू आसाराम के लाखों लोग दीवाने थे लेकिन हकीकत क्या निकली?उनका कोई भक्त भले ही लखपति या करोड़पति न बना हो लेकिन ये महंत तो अरब पति बन ही गये। इसी नियति का शिकार धर्मदा ट्रस्ट और उनसे जुड़े ट्रस्टी हैं। प्रहलाद हों, ध्रुव हों, नानक हों, कबीर हों, रविदास हों, तुकाराम हों, उन्हें किसी सिद्धपीठ की दरकार नहीं रही, किसी मजार दरगाह या दरबार की दरकार नहीं रही उनका अपना मन ही मन्दिर था, देवालय था जिसके अन्दर पैठ कर उन्होंने अपने आराध्य की उपासना की। यह उपासना ही सच्ची उपासना है और यह वहीं सफल होती है जहाँ यम-नियम की बुहारी से इस मन-मन्दिर की नियमित रूप से सफाई होती रहती है।

(झ) साईं भक्ति से राम-मन्दिर निर्माण की मुहिम कमजोर होगी, इसमें कोई संशय था तो अब नहीं रहना चाहिए क्योंकि शंकराचार्य और साईं ट्रस्ट आपने-सामने आ खड़े हुए हैं। जो मुस्लिम उलेमा साईं के मुसलमान न होने का फतवा दे रहे हैं वे इस टकराव का लाभ बाबरी मस्जिद के पक्ष में उठा सकते हैं। हिन्दू-मुस्लिम एकता एक शगूफा है, हकीकत नहीं और इसे लेकर जितना संवेदनशील हिन्दू रहा है उतना मुसलमान नहीं रहा। राम मन्दिर बनाम बाबरी मस्जिद मामले में शायद ही किसी मुस्लिम उलेमा ने मस्जिद बनाने के अलावा वहां कुछ और बनाने की वकालत की हो लेकिन एक नहीं पचासों हिन्दू नेता ऐसे आ खड़े हुए जिन्होंने वहाँ अस्पताल, स्मारक या अन्य कुछ बनाने का सुझाव दिया। हिन्दू अपने हितों पर इतना दृढ़, अटल, स्थिर, सक्रिय नहीं है जितना कि मुसलमान और शायद यही कारण है कि मथुरा, काशी ही नहीं अन्यत्र लगभग तीन हजार मस्जिदें संकेत दे रही हैं कि कभी ये मंदिर थे जिन्हें अब तक वापस नहीं लिया जा सका है। ऐसी विकट स्थिति में राम-मंदिर मुहिम कभी खतरे व आशंका से अछूती नहीं रह सकती। इसमें अकेले साईं-भक्त क्या कर सकते हैं जबकि यह देश सैकड़ो सम्प्रदायों, संतों-महंतों का देश है और हर कोई अपनी स्वतन्त्र राय रखता है।

(ञ) जिन्हें धर्म का ज्ञान नहीं वे साईं-भक्ति की बात करते हैं, यह सच है क्योंकि जहाँ भीड़ है, भेड़-चाल है, भौतिक सुख-सम्पदा की प्रवृत्ति है वहाँ धर्म और भक्ति का सत्य स्वरूप प्राय: दब जाता है। यह सच्चाई केवल साईं-भक्ति के सन्दर्भ तक सीमित नहीं है। कांवड़ यात्रा, रथ-यात्रा, कुम्भ स्नान, चारधाम यात्रा, वृन्दावन परिक्रमा तथा अन्य धार्मिक समारोहों के सन्दर्भ से भी जुड़ी हुई है। धर्म का सत्य स्वरूप तो महामुनि पतंजलि के यम-नियम में निहित है उसका कितना पालन सनातनधर्मी करते हैं?जितने भी प्रचारात्मक सम्प्रदाय हैं वे यम-नियम से परहेज करते हैं और ऐसे उपाय, संस्कार, उपासना-पद्धति, आचार-संहिता अपने अनुयायियों पर थोपते हैं जिनका लेशमात्र सम्बन्ध भी धर्म, अध्यात्म, भक्ति से नहीं होता। भक्ति तो अपने अराध्य के प्रति अटल निष्ठा, समर्पण, संवेदना की मन की अवस्था है इसमें सम्प्रदाय, मन्दिर, मस्जिद, संस्कार, आचार, उपासना-पद्धति का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। एक सुशिक्षित, संस्कारित व्यक्ति यहाँ अनुतीर्ण और एक अनपढ़, गंवार व्यक्ति उत्तीर्ण हो जाता है। नानक, कबीर निरक्षर थे लेकिन आज शिक्षित जन उन पर पी.-एच. डी. कर रहे हैं। कारण, उनकी भक्ति का स्तर काफी ऊँचा और गहरा था जिसकी थाह पाना सरल नहीं है। वे किसी धर्म या सम्प्रदाय विशेष से जुड़े भक्त नहीं थे उनकी सीधी पहुँच अपने ईश्वर से थी। धर्म, भक्ति, अध्यात्म का यही सच्चा स्वरूप लोगों तक पहुँचना चाहिए जो नहीं पहुँच पा रहा है। शंकराचार्य जी साईं-भक्तों की आलोचना कर रहे हैं तो साईं-भक्त भी शंकराचार्य पर प्रश्नों की बौछार कर उनके पद की गरिमा को तहस-नहस कर रहे हैं। इस स्थिति में यही होगा और इससे सहज छुटकारा मिलना सम्भव नहीं क्योंकि इस लीला के पीछे सभी के अपने-अपने स्वार्थ जुड़े हुए हैं। टकराव की इस स्थिति में कथित हिन्दू धर्म का उपहास दुनिया भर में उड़ रहा है, धर्म, अध्यात्म, भक्ति से लोगों का विश्वास खत्म होता जा रहा है, हमारी बद्धमूल सांस्कृतिक एकता खण्डित हो रही है, हमारा इतिहास और परम्परा धूमिल होता जा रहा है। इन खतरों की चिन्ता आज किसे है?अपने-अपने निहितार्थों की लड़ाई लड़ कर इन खतरों को टालना सम्भव नहीं है।

(ट) अंधविश्वास का हवा महल बनाया इसीलिए जाता है कि उनके अपने सपनों के महल निर्मित हो सकें। जब गौतमबुद्ध और महावीर को किसी मठ, विहार, मन्दिर की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई, नानक को किसी गुरुद्वारे की दरकार नहीं रही तो उनके अनुयायियों ने उनके नाम पर सम्प्रदाय क्यों बनाये, मठ, विहार, गुरुद्वारे, मन्दिर खड़े क्यों किये?राम और कृष्ण को अवतार बनाकर उनके देवालय स्थापित किये गये जबकि राम और कृष्ण खुद सुबह शाम की संध्या करते थे एकांत में बैठकर निराकार परमेश्वर का ध्यान करते थे, उनकी भक्ति का रसपान करते थे। महापुरुषों की आड़ में सम्प्रदायों, उपासना स्थलों, आचार संहिताओं, पूजा-पद्धतियों, जीवन शैलियों का निर्माण किया गया और उनके प्रति लोगों का विश्वास दृढ़ किया गया। यह विश्वास सिवाय अंधविश्वास के कुछ नहीं है क्योंकि उनके मूल गुरु इस विश्वास से ऊपर रह कर एक उच्च आध्यात्मिक जीवन जीने में समर्थ हुए थे। सम्प्रदायों का इतिहास अति रक्तरंजित रहा है क्योंकि अपने से अधिक प्रामाणिक, प्राणवान्, समर्थ और सक्षम विश्वास वह किसी अन्य विश्वास को मानने को तैयार नहीं थे। इससे धार्मिक जगत् में हमेशा तनाव बना रहा और धर्म, भक्ति, अध्यात्म की फसल सूखती रही, नष्ट होती रही। अपने विश्वास को पुष्ट करने के लिए जब सम्प्रदायों ने राज्याश्रय प्राप्त किया तो उनका अहंकार बढ़ता गया और स्थिति बद से बदतर बनती चली गई। ट्रस्टों की स्थापना उसी राज्याश्रय की वैकल्पिक व्यवस्था है अत: अहंकार और अंधविश्वास का सफाया अभी तक नहीं हुआ है और न ही ऐसा होने की कोई सम्भावना बचती है।

– शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

अंधविश्वास को बढ़ावा न दें मोदी

– स्वामी अग्निवेश

देहरादून : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निवर्तमान अध्यक्ष व संरक्षक स्वामी अग्निवेश ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में जाने के अपने कार्यक्रम को रद्द करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के ऐसे कदम से अंधविश्वास को बढ़ावा मिलेगा।

उज्ज्वल रेस्टोरेंट में पत्रकार वार्ता में स्वामी अग्निवेश ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने संसद के अपने पहले सम्बोधन में पाखंड व अंधविश्वास से मुक्ति का आह्वान किया था। इसे देखते हुए नेपाल में पशुपतिनाथ जाने के कार्यक्रम पर उन्हें आपत्ति है। इस मंदिर में आज भी पशुबलि होती है। सांई विवाद पर दिए अपने बयान के बाद स्वामी अग्निवेश शंकराचार्य स्वरूपानन्द के निशाने पर भी आ गये थे। शंकराचार्य ने उनके खिलाफ टिप्पणी की थी। इस पर शनिवार को स्वामी अग्निवेश ने कहा कि शंकराचार्य ने उनको आतंकवादी कहा था, इस पर उन्होंने एक रुपये की मानहानि का मुकदमा दर्ज करवाया है। इस मामले में शंकराचार्य को चार सितम्बर को दिल्ली की अदालत में हाजिर होना है। अमरनाथ में बर्फानी बाबा की आकृति पर सवाल खड़े करते हुए उन्होंने कहा कि स्विट्जरलैंड व अन्य जगह भी ऐसी आकृतियां हैं तो क्या वहां भी धार्मिक यात्रा शुरू करवा दी जाए। हजारों फीट ऊँची संवेदनशील जगहों पर आबादी का दबाव वैसे ही पर्यावरण के लिए चुनौती बना हुआ है। ऐसी धार्मिक यात्राओं को उन्होंने ढकोसला बताया है।

आर्य समाज बनायेगा मुद्दा

स्वामी अग्निवेश ने कहा कि आर्य समाज देशभर में फैल रहे फर्जी बाबाओं के जाल से मुक्ति व अंधविश्वास के खिलाफ अभियान छेड़ेगा। धर्म की आड़ में ठगों की फौज आम लोगों को लूट रही है। राज्य सरकार पर भी हमलावर होते हुए उन्होंने कहा कि केदारनाथ त्रासदी से सबक सीखने के बजाय सरकार यहां जबरन यात्रा कराने पर आमादा है।

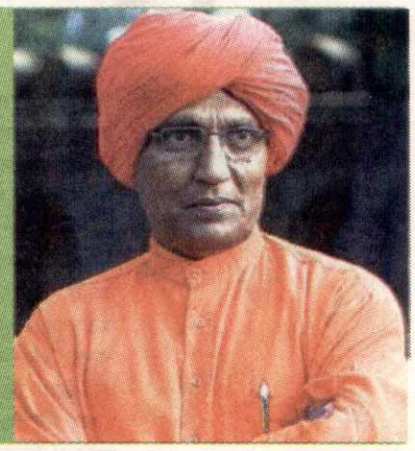

द्रोण नगरी की कहानी झूठी

स्वामी अग्निवेश ने प्रेस कांफ्रेंस में दावा किया कि नागपंचमी के दिन वो टपकेश्वर मंदिर भी गए थे। वहां उन्होंने गुफा में प्रवेश कर प्राकृतिक संरचनाएं भी देखी। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा कोई साक्ष्य नहीं मिला जिससे वहां गुरु द्रोणाचार्य की तपस्थली होने की बात पुख्ता हो सके। उन्होंने कावंड़ यात्रा व हज यात्रा पर दी जाने वाली सब्सिडी का भी खुलकर विरोध किया है।

फलित ज्योतिष का पर्दाफाश

– डॉ. अनिरुद्ध भारती

ज्योतिष शास्त्र का वर्णन वैदिक काल से ही किसी न किसी रूप में मिलता है। काल चक्र के साथ ज्योतिष शास्त्र में अनेक विकृतियाँ आ गईं और अब यह विद्या पतन के इतने गहन गर्त में गिर चुकी है कि इसका उद्धार लगभग असम्भव सा ही है। इसने तो अब दुर्दमनीय दैत्य का रूप धारण कर लिया है।

आश्चर्य तथा दु:ख तो इस बात का है, कि आधुनिक युग का सबसे महत्त्वपूर्ण, विश्वसनीय तथा सशक्त माध्यम दूर-दर्शन (टेलीविजन) इस विद्या को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान कर लोगों को निकम्मा, आलसी और परमुखापेक्षी बना रहा है। शायद ही कोई ऐसा चैनल हो, जिस पर इस विधा का पर्याप्त से अधिक महत्त्व न दिया जा रहा हो। सच तो यह है कि व्यावसायीकरण की इस दौड़ में जीवन की हर धारा विवेकभ्रष्ट होती जा रही है। हम बात कर रहे हैं, तथाकथित उन भविष्य वक्ता कलियुगी ज्योतिषयों की, जिनकी मनमोहक लच्छेदार बातें सुनकर अच्छे-अच्छे धर्मधुरीण धैर्यशाली जन भी इस वेगवती धारा में बहने से स्वयं को नहीं रोक पाते। उनके लहराते लम्बे घुंघराले केश पाश, मस्तक पर आड़ी-तिरछी चंदन की रेखाएं, नेत्रों अंगुलियों तथा मुखाकृति के नाटकीय संकेत, राशियों की चकोर तथा कुण्डलाकार संख्यावाचक चित्र बनाकर दर्शक तथा श्रोता पर ऐसा अमोघ जाल फेंकते हैं कि वह फंसे बिना रह ही नहीं सकता।

इसमें संदेह नहीं कि ज्योतिष शास्त्र की गणना आर्ष शास्त्र के अन्तर्गत वेदांग के रूप में की गई है। परन्तु इस विधा में भूगोल, खगोल, विज्ञान तथा गणित आदि के विषय में ही प्रकाश डाला गया है, मनुष्य के भावी सुख-दु:ख सम्पन्नता विपन्नता या जीवन मरण का इससे कोई सरोकार नहीं है। वस्तुत: गणित ज्योतिष सर्वथा सत्य एवं वैज्ञानिक है, फलित ज्योतिष तो इन तथाकथित ज्योतिषियों के दिमाग की ही उपज है।

आचार्य भास्कर ने लिखा है –

''शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिष चक्षुषी, श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पं करौं।
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका, पाद पद्यम द्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः॥

अर्थात् व्याकरण वेद के मुख के समान, ज्योतिष नेत्रों के और निरुक्त कानों के समान हैं। कल्प हाथों के समान, शिक्षा नासिका के समान तथा छन्द पैरों के समान हैं।

महर्षि दयानन्द ने जन्मपत्री, कुण्डली आदि के विषय में विस्तार से सोदाहरण रूप में लिखा है, उस सबका उल्लेख करता तो पिष्ट पेषण करना ही होगा। तीसरे समुल्लास में उद्धृत इन पंक्तियों को देना ही पर्याप्त है 'दो वर्ष में ज्योतिष शास्त्र सूर्य सिद्धान्तादि जिसमें बीज गणित, अंक गणित, भूगोल, खगोल, और भूगर्भ विद्या है, इसको यथावत् सीखें, परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्म पत्र, रशि, मुहूर्त आदि के फल विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठे समझ कर कभी न पढ़ें और (न) पढ़ावें।'

वैसे इस विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, आगे भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है किन्तु विशेष विस्तार में न जाकर यहाँ हम उन प्रामाणिक ज्योतिषाचार्यों तथा समाज में मान्य प्रतिष्ठित उन भुक्त भोगियों के विचारों को उद्धृत करेंगे, जिनकी सम्मति और भोगे गये परिणामों को पढ़कर सुधी पाठकगण उनसे उजागर तथ्यों को अस्वीकार नहीं कर सकेंगे।

सर्वप्रथम शान्ति निकेतन में कवीन्द्र रवीन्द्र के सान्निध्य में रहने वाले हिन्दी साहित्य के शीर्षस्थ लेखक तथा विचारक ज्योतिषाचार्य डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की सम्मति देखिए, ''हमारे देश के सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं जिनमें फलित ज्योतिष के सम्बन्ध में कोई विशेष उल्लेख नहीं है। यह विश्वास भारत के आदि युग में बिल्कुल नहीं था कि मनुष्य के भाग्य का नियंत्रण कोई आकाशचारी ग्रह या नक्षत्र कर रहा है। अपने शुभ या अशुभ कर्मों के फलस्वरूप ही मनुष्य शुभ या अशुभ फल पाता है, किसी दूसरे के कारण नहीं।''

अब दो ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जायेंगे जिन्हें पाठकगण चाह कर भी 'ना' नहीं कर सकेंगे।

पहला उदाहरण श्री पं. सुधाकर जी द्विवेदी काशी के (अपने समय के) सबसे बड़े ज्योतिषी थे। वे काशी के संस्कृत कॉलिज में ज्योतिष शास्त्र के मुख्याध्यापक थे। उनके घर एक पुत्री का जन्म हुआ उन्होंने उसकी कुण्डली तैयार की। इसके अतिरिक्त अन्य ज्योतिषियों ने भी (उसकी) कुण्डलियाँ तैयार करके भेजीं। सबने लिखा कि कन्या अत्यन्त भाग्यशाली है। जब वह कन्या विवाह के योग्य हुई तो उन्होंने अन्य ज्योतिषियों से कन्या की कुण्डली मिलाकर उसका विवाह कर दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश वह कन्या विवाह के छ: मास पश्चात् ही विधवा हो गई। अब पण्डित जी का फलित ज्योतिष से सदा के लिए विश्वास उठ गया। उन्होंने काशी के टाउन हाल में फलित ज्योतिष के विरुद्ध व्याख्यान दिया और सब ज्योतिषियों को चुनौती (चेतावनी) दी कि ''आओ इस विषय पर शास्त्रार्थ कर लो।'' परन्तु कोई भी ज्योतिषी (शास्त्रार्थ के लिए) नहीं आया। तब

उन्होंने वहीं घोषणा की कि फलित ज्योतिष पर मेरा विश्वास नहीं है, मैं इसको खेल समझता हूँ। ये ज्योतिषी लोग अपनी झूठी बकवास से जनता का धन लूटते हैं।

दूसरा उदाहरण भारत के कई व्यापारिक तथा औद्योगिक परिवारों में ''बिड़ला परिवार'' का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। इस परिवार ने अपने परिश्रम, योग्यता तथा व्यवहार कुशलता से देश का नाम ऊँचा किया है। यहां इस परिवार का परिचय प्रस्तुत करने का हमारा उद्देश्य नहीं है। परन्तु पाठक वृन्द की सामान्य जानकारी के लिए चारों बिड़ला बन्धुओं के नाम देने का लोभ हम संवरण नहीं कर पा रहे हैं। वे नाम हैं श्री जुगल किशोर बिड़ला, श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री घनश्याम दास बिड़ला तथा श्री ब्रजमोहन बिड़ला।

बिड़ला बन्धुओं के पूज्य पिता का नाम था श्री बलदेव दास जी बिड़ला। श्री बलदेव दास बिड़ला, अत्यन्त उदार, नम्र तथा खुले हृदय एवं मुक्त हाथों से दान देने में एक ही थे। श्री बलदेव दास बिड़ला अपने पिता के तर्पण के लिए बनारस गये। उस समय उनकी आयु 46 वर्ष की थी। तभी बनारस में उनकी भेंट एक प्रकाण्ड ज्योतिषी से हुई। श्री बलदेव दास जी पुराने पौराणिक विचारों के व्यक्ति थे, अत: पूजा पाठ, मृतक श्राद्ध, ज्योतिष आदि में उनका गहरा विश्वास था। वहाँ ज्योतिषाचार्य से मिलकर उन्हें अपार हर्ष हुआ। पूछने पर उन विद्वान ज्योतिषी जी ने उन्हें बताया ''आपकी कुल आयु 55 वर्ष की है।'' इस भविष्यवाणी को सुनकर श्री बलदेव दास बिड़ला कुछ चिन्तित हुए, क्योंकि उनके सामने अभी अनेक योजनाएँ परिवार को संवारने की थीं और समय केवल (ज्योतिषी के अनुसार) दस वर्ष का था।

इसके पश्चात् वे रामेश्वरम् आदि तीर्थों का भ्रमण करके बम्बई लौटे और व्यापार कार्यों में तटस्थ भाव से पुत्रों की सहायता करने लगे। शेष जीवन में काशी वास के लिए उन्होंने बुजुर्गों से आशीर्वाद लिया और अधिकांश समय वहीं (काशी में) बिताने लगे। इसी दौरान श्री बिड़ला जी ने उसी ज्योतिषी को फिर बुलवाया जिसने उनकी मृत्यु की अवधि बताई थी। इस समय वे 55 वर्ष की आयु को पार कर चुके थे। उन्होंने ज्योतिषी जी से कहा – ''तेरी बताई तिथि तो निकल गई, अब बता मुत्यु कब आने वाली है?'' ज्योतिषी जी फिर कुण्डली का अध्ययन करने और अंगूठे से उंगलियों के पौरवों को छूते हुए भविष्य देखने में मग्न हो गये। अपनी दूर दृष्टि से विचार कर ज्योतिषी जी ने कहा – ''अभी आपको दस वर्ष और जीना है।'' श्री बलदेवदास ने उचित दक्षिणा देकर मुस्कराते हुए पं. जी को विदा किया। अब वे स्थायी रूप से काशी में ही रहने लगे थे।

व्यापार से उन्होंने हाथ खींच लिया और पण्डितों तथा ज्ञानियों से धर्म चर्चा तथा उनका सम्मान करने में ही समय व्यतीत करने लगे। इस शुभ कार्य को करते हुए उन्होंने पैंसठ वर्ष की आयु सीमा भी पार कर ली। एक दिन उन्होंने फिर उसी ज्योतिषी को बुलाया और उनका सत्कार तथा जलपान कराने के पश्चात् फिर यह जिज्ञासा की– ''बताओ अब और कितना जीना है मुझे?'' ज्योतिषी जी फिर जन्म पत्री को नये सिरे से बांचने लगे। तभी श्री बलदेवदास जी ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा – ''बस रहने दो पण्डित जी?क्यों कष्ट करते हो। आप जन्म पत्री ही बांचना जानते हैं, कर्म पत्री नहीं।'' पता नहीं ज्योतिषी जी ने श्री बिड़ला जी की इस व्यंग्योक्ति का समझा या नहीं, वह अपना सा मुँह लेकर चले गये। इसके बाद उन्होंने फिर कभी किसी ज्योतिषी को नहीं बुलाया। भविष्यवाणी पर विश्वास करने का तो अब प्रश्न ही कहाँ था?सन् 1863 में जन्म लेकर सन् 1956 में 93 वर्ष की पूर्ण आयु कर श्री बलदेव दास जी बिड़ला पंच तत्व में विलीन हो गये।

देखे आपने फलित ज्योतिष के भयानक परिणाम?

जीवन के भविष्य को अन्धकार में धकेलने वाली, मानव समाज को पंगु करने वाली इस विधा को हमने इसीलिए दुर्दमनीय दैत्य कहा है। ऊपर जिन विद्वानों तथा भुक्तभोगी महानुभावों का उल्लेख किया गया है, वे सभी पौराणिक मान्यता के विश्वासी और सनातनी परम्परा के वाहक हैं। परन्तु इस ज्योतिष दैत्य को उन्होंने जिस रूप में देखा तथा समझा है, उससे उन्होंने स्वयमेव तौबा कर ली। भला क्यों?समझने वाले समझ गये जो ना समझे वे .....। ओ३म् तत्सत्।

– आर्य पी. जी. कॉलेज, पानीपत-132103,
मो.:-9996023046

thearyasamaj.org

आर्य समाजों के सम्मानित पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन

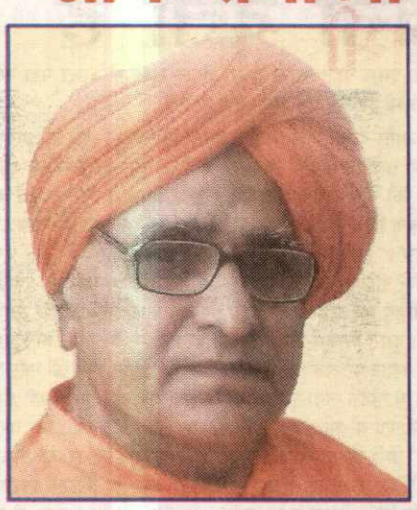

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने वेद आधारित विचारों, समाज के सर्वांगीण हित तथा मानव मात्र के कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी और देश में फैले आडम्बर, अन्धविश्वास, पाखण्ड और कुरीतियों से लड़ना मुख्य उद्देश्य बनाया था और वे इसमें सफल भी हुए थे। लेकिन आज चारों तरफ जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड शोषण और नारी उत्पीड़न का बोलबाला है और आर्य समाज चुप्पी साधे बैठा है। सारे देश की नजरें आज आर्य समाज के ऊपर टिकी हैं। क्योंकि आर्य समाज के ही पास वह वैचारिक और आध्यात्मिक दृष्टि है जो उपर्युक्त महारोगों का उन्मूलन कर सकती है। आपस के विवाद, लड़ाई, झगड़े, मुकदमेंबाजी और पद लोलुपता के कारण आर्य समाज की यह स्थिति बन गई है।

सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाकर जो गुरुतर दायित्व आप सबने मुझे सौंपा है तो मेरा यह दायित्व बनता है कि मैं भरसक प्रयास करके आप सबके सहयोग से आर्य समाज को उसी गौरव पूर्ण स्थिति में पहुँचाऊँ जिसके लिए आर्य समाज जाना जाता रहा है। मेरा आप सभी से विनम्र निवेदन तथा आह्वान है कि हम सभी को एक दूसरे के प्रति सम्मान, सद्भाव और विश्वास रखते हुए महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना है। किसी भी प्रकार के विवाद से परे होकर हम सब आर्य समाज को गति प्रदान करने में जुट जायें और इस कार्य को करने के लिए आर्य समाज की प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण ईकाई विभिन्न स्थानों पर स्थापित आर्य समाजें हैं और उनके सम्माननीय पदाधिकारी हैं। प्रत्येक आर्य समाज के पदाधिकारियों से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे अब सक्रिय हों और आर्य समाजों में आकर्षक कार्यक्रमों के द्वारा आमजनों को जोड़ने का प्रयास करें। आमजनों का विश्वास प्राप्त करना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। श्रावणी का पर्व मनाने की आप सबने पूर्ण तैयारी कर रखी है और इसी महापर्व से हम सबको अपने अभियान को प्रारम्भ कर देना चाहिए यह एक ऐसा सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है कि हम अपने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा आमजनों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहला कार्य जो हमें करना है वह है अपनी आर्य समाज की चारदीवारी से बाहर निकलना। हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन इस पर्व पर पार्कों में, बाजारों में, स्कूलों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर विशेष यज्ञों का आयोजन करें तथा आमजनों को उसमें आहुतियां डालने के लिए प्रेरित करें। क्षेत्र के विशिष्टजनों को सरकारी अधिकारियों को भी विशेष रूप से आमन्त्रित करें और उनकों वहां पर वैदिक साहित्य भी भेंट करें। इससे लोगों को हमारी मान्यताओं का पता चलेगा। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम वैदिक प्रचार संस्कार, स्वाध्याय तथा योग आदि पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।

आर्य समाजों में योग आदि की कक्षायें लगाकर, प्रशिक्षण शिविर लगाकर हम अपने आस-पड़ोस के युवाओं को आकर्षित कर सकते हैं और उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं। क्योंकि युवा ही किसी समाज या राष्ट्र की शक्ति होते हैं आर्य समाज में युवाओं की कमी को दूर करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने कार्यक्रमों के द्वारा उन्हें आकर्षित करें और उन्हें जागरूक करें तथा उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं, शिविरों के माध्यम से आगे लायें तथा योग्य युवाओं को अधिक से अधिक आर्य समाज का सदस्य बनायें। उनके चारित्रिक विकास का भी पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। समग्र समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए युवाओं पर विशेष ध्यान देना होगा और यह एक बुनियादी आवश्यकता है।

आर्य समाज को सक्रिय करने के लिए विभिन्न स्थानों पर जहां आर्य समाज नहीं है या दूर है वहां नवीन आर्य समाज की स्थापना कर, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास के विरुद्ध मोर्चा खोलना भी हमारे प्राथमिक कार्य में होना चाहिए। ग्रामीण अंचल और दूर दराज के क्षेत्रों में वेद प्रचार का सघन कार्यक्रम बनाकर चलना होगा तथा सुन्दर और सस्ते वैदिक ट्रैक्ट वितरित कर आमजनों को अपनी मान्यताओं से परिचित करना होगा तथा भारी संख्या में लोगों को आर्य समाज का सदस्य बनाने पर विशेष ध्यान देना होगा।

देखा गया है कि आर्य समाजों में महिलाओं की संख्या नगण्य सी होती है हमें इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नारी जाति को ऊपर उठाने के लिए कठिन संघर्ष किया था। लेकिन आज हमारी मातायें, बहनें सबसे ज्यादा पाखण्ड व शोषण का शिकार हो रही हैं। हमें आर्य समाजों में महिलाओं को विशेष प्रयास करके लाना होगा। हम जहाँ अपने परिवार की माताओं, बहनों को आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित करें वहीं पास-पड़ोस की महिलाओं को भी आर्य समाज में लाने का प्रयास करें। ऐसे कार्यक्रम आर्य समाज में होने चाहिए जिससे महिलायें आकर्षित हों और आर्य समाज की विचारधारा से परिचित हों।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है एक ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं हमें अपने कार्यों से चरित्र से व्यवहार से अपने पास पड़ोस के लोगों पर एक विशेष छाप छोड़नी है। और इसके लिए अपने पास पड़ोस और गली-मोहल्ले के लोगों के घरों में दुख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा उनकी सहायता करनी होगी। जिस मोहल्ले या गांव में आर्य समाज स्थापित है, उस मोहल्ले के परिवारों के पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में आप अपनी उपस्थिति दर्ज करायें तथा यथाशक्ति सहयोग प्रदान करें। लोगों से मेल मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे। जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम अपनी बात उन तक पहुंचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्य समाज में महिला चरित्र निर्माण शिविर लगाकर पास पड़ोस की महिलाओं को हम आकर्षित कर सकते हैं। प्रतियोगिता तथा गोष्ठियां करके विदुशी महिलाओं को आमन्त्रित करके उन पर अपने विचारों का प्रभाव डाला जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि महिलाओं को विशेष रूप से आर्य समाज में लाने का प्रयास करना होगा तथा उन्हें आर्य समाज का सदस्य भी बनाना चाहिए। यह ध्यान रखना होगा कि एक महिला को आर्य बनाने का मतलब है एक परिवार को आर्य बनाना। आर्य समाज से जुड़ी हुई माताओं बहनों से मैं आशा करता हूँ कि वे एक जागरूक प्रहरी की भूमिका निभाते हुए सक्रिय होकर अन्य दुःखी महिलाओं की पीड़ा को समझें और उनकी सहायता करें तो एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात सम्भव है। महिलाओं को प्रशिक्षित करके इस अभियान के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इन सब कार्यक्रमों को अपना कर हम अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में हम अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे तथा निश्चित रूप से हम मानवता के हित में समाज और राष्ट्र के हित में एक ठोस कदम उठा पायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी भावनाओं को ध्यान में रखकर आप सभी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्य में प्राण-पण से जुटेंगे और आर्य समाज को गति प्रदान करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अपने समस्त कार्यक्रमों की रिपोर्ट विस्तार से आप हमें भेजें चित्र भी साथ में भेजें जिसे हम वैदिक सार्वदेशिक में प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे। वैदिक सार्वदेशिक में आपका समाचार प्रकाशित होने पर जहां आपके कार्य की सराहना होगी वहीं अन्य लोगों को इससे प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक सभा

The Times Of India

Illegal loudspeakers at mosques must go: HC

Rosy Sequeira,TNN | Jul 31, 2014, 03.14 AM IST

MUMBAI: The Bombay high court on Wednesday directed the police to remove loudspeakers from those mosques in Mumbai and Navi Mumbai that have not obtained required permissions for them from the authorities.

A division bench of Justices V M Kanade and P D Kode, while hearing a PIL, said that unauthorized loudspeakers must be confiscated irrespective of whether they were installed for "Ganeshotsav, Navratri or in mosques... irrespective of religion, caste or community". It called on citizens to "come together" against noise pollution.

A recent RTI plea unearthed data that showed 45 of the 49 mosques in the area did not have the requisite permission for loudspeakers.

The PIL, filed by Navi Mumbai resident Santosh Pachalag earlier this year, raised the issue of "illegal use of loudspeakers" by mosques in Navi Mumbai. It claimed that, according to data obtained recently under the Right to Information Act, 45 of the 49 mosques (around 92%) in the area do not have permission for loudspeakers. It added that the mosques are located in silence zones, which house schools and hospitals, and that their loudspeakers surpass the decibel levels allowed under the Noise Pollution (Control and Regulations) Rules 2000.

The PIL, filed by Navi Mumbai resident Santosh Pachalag earlier this year, raised the issue of "illegal use of loudspeakers" by mosques in Navi Mumbai.

The judges on Wednesday asked the state to find out if the mosques have taken necessary approval. "If they have not, what steps have you taken? This cannot go on," said Justice Kanade.

Pachalag's advocate D G Dhanure said the police can confiscate the loudspeakers if they are being used without proper approvals. He submitted that, according to RTI data, Ganpati and Navratri mandals in Thane had applied for permission to play loudspeakers.

The bench said that unauthorized loudspeakers must be confiscated in all cases, "whether Ganeshotsav or Navratri or mosques". It observed that festivals like Ganeshotsav and Navratri can get noisy. "They are a source of continuous noise pollution. It is impossible to sleep during Ganeshotsav, particularly its last five days," said Justice Kanade, adding that "patients and old people at home" are especially affected. The judges called for a citizens' initiative against noise pollution.

The judges directed the state to file an affidavit on whether all mosques in Mumbai and Navi Mumbai that use loudspeakers have sought permission for them. "If necessary permission is not obtained, the police are directed to take adequate steps to removal these loudspeakers," they noted in their order.

thearyasamaj.org

रूस के महान साहित्यकार एवं ऋषि टाल्सटाय द्वारा लिखित कहानी

शराब किस प्रकार इन्सान को शैतान बना देती है

एक गरीब किसान बड़े सवेरे अपने हल के साथ खेत पर पहुंचा। नाश्ते के लिए उसके पास रोटी थी। उसने अपने हल को ठीक किया। अपने कोट को उतार कर उसी में रोटी लपेट कर पास की झाड़ी की ओट में रख दिया और अपने काम में जुट गया कुछ समय पश्चात् उसके बैल थक गये और उसे भूख भी लगी तो उसने हल चलाना बन्द कर दिया। उसने बैलों को खोल दिया और अपने कोट में रखी रोटी लाने के लिए झाड़ी की ओर बढा। किसान ने कोट उठाया, लेकिन वहाँ रोटी न थी। उसने इधर-उधर देखा, कोट को झाड़ा, लेकिन रोटी नदारद। किसान समझ न सका कि मामला क्या है?उसने सोचा ताज्जुब है, मैंने किसी को इधर आते-जाते नहीं देखा, क्या यहां पहले से कोई बैठा था, जो मेरी रोटी ले गया?वहां एक शैतान था जिसने रोटी उस समय चुरा ली थी जबकि किसान हल जोत रहा था। जब किसार झाड़ी के पास आया, तो वह इस इंतजार में था कि किसान प्रेतों के राजा को कुछ गालियाँ दे। किसान रोटी खोकर दुखी था। उसने सोचा- इस तरह काम नहीं चलेगा। मुझे भूखो नहीं मरना है। इसमें कोई शक नहीं कि जो कोई भी रोटी ले गया होगा, उसको मुझसे ज्यादा जरूरत रही होगी। भगवान उसका भला करे। वह कुए पर गया। पानी पीकर अपनी भूख मिटाई और थोड़ी देर तक आराम किया। फिर अपने बैलों को लेकर खेत जोतने लगा। शैतान बहुत दुखी हुआ। उसे दुख इस बात का था कि वह किसान से गलत काम कराने में सफलता न पा सका। उसने अपने मालिक प्रेतों के राजा के पास जाकर आज की घटना की सूचना देने का निश्चय किया। वह प्रेतों के राजा के पास पहुंचा उसे बताया कि किस प्रकार उसने किसान की रोटी ली और किसान ने गालियां देने के बजाय वे शब्द कहे- भगवान उसका भला करे। इस बात को सुनकर प्रेतों का राजा बहुत क्रुध हुआ। उसने कहा- यदि मनुष्य ने तुम्हारे साथ भलाई की है तो इसमें तुम्हारी गलती है। तुमको अपने कार्य का ज्ञान नहीं है। यदि किसान और उसकी स्त्री नेक कार्य करते रहे तो हम घाटे में पड़ जायेंगे। तुम वापस जाओ और अपनी गलतियाँ सुधारो। तीन साल में तुम अपने कार्य में सफल न हुए तो मैं तुम्हें पवित्र जल में फैंक दूंगा। शैतान डर गया। वह तुरंत धरती पर वापस आया। उसे एक उपाय सूझा। उसने एक मजदूर का रूप बनाया और गरीब किसान के साथ काम करने लगा। पहले साल उसने किसान को सलाह दी कि अनाज निचली सतह की जमीन में बो। किसान ने उसकी सलाह मान ली। उस साल सूखा पड़ा अन्य किसानों की फसलें सूखा पड़ने के कारण नष्ट हो गयीं लेकिन इस किसान की फसल बहुत अच्छी हुई। उसके पास इतना अनाज हो गया कि सालभर खाने के बाद भी काफी अनाज बचा रहा। शैतान ने सोचा फिर गलती हो गयी। अगले साल उसने किसान को सलाह दी वे ऊंचे स्थान पर फसल बोए। उस साल अधिक वर्षा के कारण अन्य किसानों की फसल बर्बाद हो गयी, लेकिन किसान की फसल लहलहाती रही। उसके पास इतना अनाज हो गया कि वह समझ नहीं पा रहा था कि उसका क्या करे?तब शैतान ने उसे अनाज से शराब बनाने की सलाह दी। किसान ने शराब बनाई। वह स्वयं पीने लगा और अपने दोस्तों को भी पिलाने लगा। इतना सब कराने के पश्चात शैतान प्रेतों के राजा के पास गया उसने अपनी सफलता की कहानी सुनाई। प्रेतों के राजा ने कहा मैं स्वयं चलकर देखूंगा कि तुमको कितनी सफलता मिली है?

वह किसान के घर आया। उसने देखा कि किसान ने अपने अमीर दोस्तों को दावत दी है और उन्हें शराब पिला रहा है। किसान की स्त्री उसके दोस्तों को शराब दे रही है। इसी बीच किसान की स्त्री के हाथ से एक गिलास छूट गया और शराब फर्ष पर फैल गयी। किसान ने गुस्से से अपनी पत्नी की ओर देखा और

बोला, 'तुम क्या कर रही हो?बेवकूफ स्त्री?क्या तुम सोचती हो कि यह शराब मामूली पानी है, जिससे फर्ष धोया जाये?' शैतान ने प्रेतों के राजा की ओर देखा और बोला, 'देखिये, यह वही व्यक्ति है, जिसे किसी समय अपनी रोटी खो जाने का जरा भी गम न था और आज अपनी प्यारी बीवी को डांट रहा है।'

किसान अब भी गुस्से में था। वह स्वयं मेहमानों को शराब देने लगा। उसी समय एक गरीब किसान जिसे निमंत्रण नहीं मिला था, काम से लौटते समय वहां आया। उसने देखा कि लोग शराब पी रहे हैं। वह दिन भर के परिश्रम से बहुत थका हुआ था। उसे भूख लगी थी। वह भी वहीं बैठ गया। उसे बहुत जोर से प्यास लग रही थी, लेकिन किसान ने उसे पूछा भी नहीं। केवल इतना बोला कि यहां कोई खैरातखाना नहीं खुला है कि जो भी आ जाए उसे में खिलाता-पिलाता रहूं। प्रेतों का राजा इससे बहुत प्रसन्न हुआ। शैतान खुशी से उछल पड़ा और बोला 'रूकिये, अभी आगे देखिये, क्या-क्या होता है।'

किसान ने अमीर दोस्तों के साथ खूब शराब पी। वे झूठ-मूठ की तारीफ करने लगे। प्रेतों का राजा किसान के मित्रों की बातें सुन-सुनकर आनन्दित होता रहा। उसने शैतान की खूब तारीफ की और कहा, 'शराब ने इन किसानों को लोमड़ी की तरह बना दिया है। वे एक-दूसरे को बेवकूफ बना रहे हैं। शीघ्र यह हमारे हाथों में होंगें'। 'आगे क्या होता है, इसका इंतजार कीजिये। उन्हें एक गिलास और तो पीने दीजिए। अभी तो वे लोमड़ी की तरह व्यवहार कर रहे हैं। शीघ्र ही खूंखार भेड़िये की तरह लड़ते देखेंगे,' शैतान बोला किसान और उसके दोस्तों ने शराब का दूसरा गिलास पिया। उसकी हरकतों में जंगलीपन आने लगा था। मधुर बातों के स्थान पर अब वे गुस्से से बोल रहे थे। एक दूसरे को गालियां देने लगे। शीघ्र ही वे लड़ने लगे। मारपीट में किसान को खूब पीटा गया। प्रेतों का राजा बड़ी सफलता के साथ यह सब देख रहा था। वह बोला, 'यह बहुत अच्छी बात हुई।' तभी शैतान बोला, 'रूकिए, और देखिए। इसको तीसरा गिलास तो पीने दीजिए। अभी तो ये भेड़ियों की तरह लड़ रहे हैं, एक गिलास और पीते ही ये और बुरा व्यवहार करने लगेंगे।' किसान और किसान के दोस्तों ने शराब का तीसरा गिलास पिया। वे अब जंगली जानवरों-सा व्यवहार करने लगे। वे भयानक आवाजें करने लगे। वे स्वयं नहीं समझ पा रहे थे कि वे क्यों इस प्रकार शोर मचा रहे हैं। धीरे-धीरे मेहमान जाने लगे। किसान उन्हें बाहर पहुंचाने लगा। जब वह मेहमानों को पहुंचाकर जाने लगा तो एक गड्ढे में गिर पड़ा। वह नीचे से ऊपर तक कीचड़ में सन गया। गिरते ही वह चिल्लाने लगा।

प्रेतों का राजा इससे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, 'तुमने आदमी को गिराने के लिए शराब जैसी चीज का आविष्कार कर, अपनी पिछली भूल को अच्छी तरह सुधार लिया है। लेकिन मुझे बताओ यह शराब तुमने किस प्रकार तैयार कराई है?शैतान ने कहा, 'मैंने केवल इतना ही किया है कि किसान के पास अनाज जरूरत से ज्यादा हो गया।' जानवरों का खून मनुष्य में हमेशा ही रहता है, लेकिन मनुष्य के पास आवश्यकताभर को ही अनाज होता है तो वह शान्ति से रहता है। उस समय किसान को एक रोटी खो जाने पर कष्ट नहीं हुआ था, लेकिन जब उसके पास आवश्यकता से अधिक अनाज हो गया तो वह उससे आनन्द की खोज करने लगा। और मैंने उसे गुमराह करके आनन्द का रास्ता दिखाया। वह था शराब का सेवन।

और वह जब अपने आनन्द के लिए ईश्वर की दी हुई तमाम बरकतों को शराब में उड़ाने लगा। जब लोमड़ी, भेड़िये का स्वभाव उसके अन्दर से अपने आप प्रकट हो गया। यदि वह ऐसे ही पीता रहा तो वह हमेशा के लिए जंगली जानवर बन जायेगा। प्रेतों के राजा ने शैतान की खूब तारीफ की। उसकी पहले की भूल माफ कर दी और उसे शैतानों का मुखिया बना दिया।

– आर्य नीति से साभार

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

राजस्थान के सीकर जिले में मानव तस्करी और बंधुआ मज़दूरी के खिलाफ मामला दर्ज कराया

मानव तस्करी एवं बंधुआ मजदूरी के मामले पर सीकर प्रशासन जहां पर्दा डालने की कोशिश कर रहा था, वही बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने पहल करते हुए राजस्थान के थाना सदर, नीम का थाना, जिला सीकर में FIR दर्ज करवा कर प्रशासन से उक्त मामले में जांचकर बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास हेतु मुक्ति प्रमाण पत्र की मांग की है।

मामला यह था कि दिसम्बर, 2013 में जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़ के दलित मजदूर, छत्तीसगढ़ निवासी ऐजेन्ट लक्ष्मी नारायण कुर्रे के चंगुल में फंस गए। लक्ष्मी नारायण कुर्रे ने एक हजार रू0 प्रति मजदूर की दर से 35 मजदूरों को एडवान्स देकर कुबेर ब्रिक उद्योग, चला–गुहाना, नीम का थाना, सीकर, राजस्थान ले आया। भोले–भाले मजदूर शिक्षा के अभाव में लक्ष्मी नारायण कुर्रे की चालाकी न समझ सके और मानव तस्करी के शिकार हो गए। लक्ष्मी नारायण कुर्रे ने कुबेर ब्रिक उद्योग के मालिक श्री लाल सिंह को साढ़े आठ लाख रू0 में 35 मजदूर बैच दिये और फिर लक्ष्मी नारायण कुर्रे साढ़े आठ लाख रूपयै लेकर फरार हो गया और मजदूरों को फूटी कोड़ी तक नही दी।

लाल सिंह ने मजदूरों को प्रतिदिन 50,000 ईंट बनाने हेतू दबाव देना शुरू किया। मजदूर रात–दिन काम करके भी 50,000 ईट नही बना पा रहे थें। तब मजदूरों ने अंत में काम छोड़कर फिर छत्तीसगढ़ जाने की सोचीं और मजदूरों ने मालिक लाल सिंह को अपने मन की पीड़ा बता डाली। लाल सिंह आग बबूला हो गया और उसने कुल 6 मजदूरों को कचंनपुर गांव मे ले जाकर बन्दी बना लिया। अन्य सभी मजदूर डर गए और फिर सब ने वापस काम करना शुरू कर दिया। ईधर मजदूरों के परिजनों से लाल सिंह और उसके गुण्डों ने मिलकर डेढ़ लाख रू0 बैंक खाते के जरिये छत्तीसगढ़ से मंगवा लिया। बेचारे मजदूरों के परिजनों ने अपने परिवार के सदस्यों को बचाने के खातिर डर के मारे डेढ़ लाख रू0 लाल सिंह द्वारा दिये गए बैंक खाता संख्या में स्थानान्तरित कर दिये किन्तु लला सिंह अपनी हरकतो से बाज नही आया। उसने बंधुआ मजदूरी करवाने में कोई कसर नही छोड़ी। फिर लाल सिंह ने बंधुआ मजदूरों की तीन बेटियों को तीन लाख रू0 की एवज में बेचने की बात की।

सभी बंधुआ मजदूर भय से तिलमिला रहे थे। ईधर लाल सिंह के पूर्व पार्टनर ने महिलाओं की टीम के साथ लाल सिंह के ईंट भट्टे पर धरना दे दिया। पुलिस आ जाने के खौफ से लाल सिंह ने 12 जुलाई, 2014 को सभी मजदूरों से खाली वाउचर्स पर अंगूठे के निशान ले लिए और मजदूरों के साथ मारपीट करके उनको ईंट भट्टे से खदेड़ दिया गया। दिनांक 13 जुलाई, 2014 को जब बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यवाहक निदेशक निर्मल गोराना, नीम का थाना प्रशासन के साथ मौके पर पहुंचे तो मौके पर मजदूर नही मिले। फिर संगठन ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा, छत्तीसगढ़ शाखा से सम्पर्क करके मजदूरों को पुनः अन्याय और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करने की राह प्रदान की और दिनांक 1 अगस्त, 2014 को ईंट भट्टा मालिक लाल सिंह, लक्ष्मी नारायण कुर्रे, गिरधारी, भगत मुंशी के खिलाफ मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी के जुर्म में आई0पी0सी0 के सेक्शन 370 एवं 374 तथा बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम, 1976 के सेक्शन 16 के तहत मुकदमा दर्ज करवाया। पुलिस बंधुआ मजदूर श्री नन्नदराम और लीलाधर को लेकर मौके पर पहुंची और मौका मुआवना किया। उक्त मामले में बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एवं जिलाधिकारी जांजगीर चांपा को पत्र भेजकर बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास हेतु सहयोग की अपील की है।

प्रेषक : निर्मल गोराना कार्यवाहक
निदेशक–बंधुआ मुक्ति मोर्चा

निःशुल्क शिक्षा का एकमात्र केन्द्र
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार–249404 (उत्तराखण्ड)
प्रवेश सूचना

सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के अन्तर्गत 'स्वामी दर्शनानन्द जूनियर हाईस्कूल' (कक्षा–6 से कक्षा–8 तक) एवं उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर नैनीताल द्वारा संचालित पूर्व मध्यमा प्रथम खण्ड (कक्षा–9) एवं उत्तरमध्यमा प्रथम खण्ड (कक्षा–11) में प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशर्थियों की शिक्षा निःशुल्क है। आवासीय छात्रों से भोजन शुल्क रुपये 1200/– प्रतिमाह, रुपये 50/– प्रतिमाह कम्प्यूटर शुल्क एवं रुपये 5100/– प्रवेश शुल्क (जो केवल एक ही बार लिया जाता है।) निर्धारित है। ऋतु अनुसार वस्त्र, बिस्तर, पुस्तकें, दूध घी आदि का व्यय पृथक से अभिभावक को वहन करना होगा। संस्कृत, हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, कम्प्यूटर तथा योग आदि विषयों में जहां दक्षता प्रदान की जाती है, वहीं भारतीय संस्कृति, यज्ञ–याग, एवं वेदमंत्रों का गुंजन छात्र के परिवेश को सुवासित भी करेगा। अभिभावकों से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक अपने बालकों को गुरुकुल में प्रवेश दिलायें।

– सम्पर्क सूत्रः– 9319030270, 9219406074

आर्ष गुरुकुलों के विद्यार्थी छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए शीघ्र आवेदन भेजें

जो छात्र अपने आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने में रुचि रखते हैं, परन्तु आर्थिक कठिनाई अनुभव कर रहे हैं वे मध्यमा या शास्त्री कक्षा के छात्र अपना प्रार्थना पत्र गुरुकुल के आचार्य के अनुमति पत्र से साथ **मंत्री जी, परम मित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक** को संबोधित करते हुए निम्न पते पर शीघ्र भेजें। गुरुकुलों के आचार्यों से निवेदन है कि वे अपने एक योग्य छात्र का आवेदन शीघ्र भिजवायें।

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना, उड़ीसा

आर्य समाज मंदिर मण्डी (हिमाचल प्रदेश) में श्रावणी पर्व का आयोजन

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी पर्व (वेद सप्ताह) का पावन आयोजन रक्षाबंधन 10 अगस्त से 14 अगस्त, 2014 तक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर प्रख्यात वेद प्रवक्ता आचार्य शिव कुमार शास्त्री वेद ज्ञान प्रवाहित करेंगे तथा भजनोपदेशक पं. सुखपाल विश्वकर्मा रेडियो सिंगर आकाशवाणी दिल्ली अपने सुमधुर भजनों से वातावरण को भक्तिमय बनायेंगे।

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस पवित्र वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर इष्ट मित्रों तथा सपरिवार भाग लेकर अपने तन–मन को पवित्र करें।

–निवेदक–मंत्री, आर्य समाज मंण्डी, दूरभाष–01905–225658

पृष्ठ–1 का शेष

शामली में हुआ स्वामी आर्यवेश जी का भव्य अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज वेद को सर्वोपरि मानता है स्वामी जी ने कहा कि वेद के विरुद्ध और विपरीत जो कुछ है वह आर्य समाज को मान्य नहीं। वेद किसी भी रूप में सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी आदि की स्वीकृति नहीं देता अतः इन सब बुराईयों के विरुद्ध बढ़–चढ़कर काम किया जायेगा।

स्वामी जी ने कहा कि वेद सार्वकालिक ही नहीं सार्वभौमिक भी है विश्व की यह एक मात्र अनमोल धरोहर है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। महर्षि ने इसी कारण वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म निश्चित किया था जिसका पालन हमें करना है। महर्षि दयानन्द का प्रथम आह्वान था कि वेदों की ओर लौटो। महर्षि के इसी महत्त्वपूर्ण विचारों को आगे बढ़ाते हुए हमने सर्व प्रथम वेदों के प्रकाशन का संकल्प लिया और 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है यह बहुत बड़ा कार्य है इसमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है घर–घर में वेद पहुंचे इसके लिए हमने बहुत ही कम मूल्य पर वितरित करने का लक्ष्य बनाया है। दीपावली तक जिन महानुभावों की अग्रिम धनराशि हमें प्राप्त हो जायेगी उनको यह वेद सैट मात्र 2100 रुपये में प्रदान किया जायेगा। और जो महानुभाव महर्षि के इस कार्य के महायज्ञ में एक लाख रुपये की आहुति प्रदान करेंगे उनका संक्षिप्त परिचय एवं चित्र वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा उपहार स्वरूप उनको 10 वेद सैट भी प्रदान किये जायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि मानव समाज के निर्माण एवं सांसारिक जीवन व्यतीत करने के जो नियम वेद में दिये गये हैं वैसे किसी भी धर्म ग्रन्थ में नहीं है। वेदों को घर–घर में पहुँचाकर हम एक आदर्श समाज स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी जी ने आह्वान किया कि आप सब अपने–अपने क्षेत्रों में अधिक से अधिक परिवारों में वेद पहुँचाने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि इस कार्य से आर्य समाज जहाँ अपनी प्रासंगिकता और सार्थकता सिद्ध कर पायेगा वहीं अपनी पहचान और विश्वसनीयता में भी वृद्धि करेगा। हमारा प्रयास है कि घर–घर में वेदों को पहुंचाकर उनके प्रति विशाल स्तर पर रुचि, विश्वास, आस्था व श्रद्धा उत्पन्न करना। आम लोगों को आर्य बनाने का इससे प्रशस्त पथ और क्या हो सकता है।

स्वामी जी ने आह्वान किया कि आर्य समाज में युवाओं को आगे लाने की अत्यन्त आवश्यकता है और आप सब अपने–अपने पुत्र–पुत्रियों को आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित करें जिससे वहाँ आकर वे प्रशिक्षित होकर आर्य समाज का कार्य कर सकें।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले पट्टाभिसीतारमैया के कथन की चर्चा करते हुए कहा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में 80–85 प्रतिशत आर्य समाजियों ने भाग लेकर देश को स्वतन्त्र कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और आज फिर आर्यों में, युवाओं में उसी ज़ज्बे की जरूरत है। क्योंकि आज देश में पाखण्ड, शोषण, भ्रष्टाचार सहित अनेकों बुराइयाँ पैर पसार चुकी हैं और इनसे आर्य समाज का युवा वर्ग ही छुटकारा दिला सकता है। उन्होंने बताया कि यहां पर श्री वेद प्रकाश जी के नेतृत्व में युवक परिषद् और पूनम आर्या जी के नेतृत्व में युवती परिषद् का गठन किया जा चुका है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि स्वामी आर्यवेश जी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर काफी दिनों से देखने की हार्दिक इच्छा थी जो अब पूर्ण हुई है। उन्होंने कहा कि समाज में दो ही वर्ग है आर्य और अनार्य। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है। तो श्रेष्ठ व्यक्तियों का सहयोग करें। उन्होंने वेद के दो मंत्रों की व्याख्या करके अपने कथन को स्पष्ट करते हुए स्वामी आर्यवेश जी को तन–मन–धन से सहयोग करने का आह्वान किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रभारी श्री रामकुमार आर्य, श्रीमती नीलम आर्या, स्त्री आर्य समाज शामली, आचार्य रणवीर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज कैराना, धर्मवीर वर्मा, श्री विश्व देव परमार, श्री महेन्द्र भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर श्रीमती नीलम आर्या, पूर्व मंत्राणी स्त्री आर्य समाज शामली, श्री प्रवीण आर्य महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्रीमती पूनम आर्या, ईरा प्रसाद शास्त्री ने मधुर भजनों से उपस्थित जन समूह को आत्मविभोर कर दिया। इससे पूर्व आर्य समाज के भजनोपदेशकों ने प्रभु भक्ति के गीतों से समारोह में ऊर्जा का संचार किया।

समारोह में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम, तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, ब्र. रामफल, मा. शिवकुमार जी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान
गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ, (उ. प्र.)
वैदिक शोध–संगोष्ठी

वैदिक वाङ्मय में नैतिकतत्त्व

श्रावण शुक्ल एकादशी, गुरुवार, वि. सं. 2071, 7 अगस्त, 2014

वेदों के मूर्द्धन्य विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस के अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम में श्रावण शुक्ल एकादशी, गुरुवार, वि. सं. 2071, तदनुसार दिनांक 7 अगस्त, 2014 को प्रातः 10.30 बजे ''वैदिक वाङ्मय में नैतिकतत्त्व'' विषय पर आयोजित शोधसंगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करने एवं चर्चा में भाग लेने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं। विद्वज्जनों से निवेदन है कि अपना वैदुष्यपूर्ण लेख (Font- Walkman Chanakya 901) में टंकित कराकर pavamani1986@gmail.com पर मेल करें तथा लेख का प्रकाशित प्रारूप (टंकित प्रति) गोष्ठी में पढ़ने हेतु साथ लाने का कष्ट करें। साफ्ट एवं हार्ड कॉपी उपलब्ध होने पर ही स्तरीय लेख त्रैमासिक शोध पत्रिका 'पावमानी' में प्रकाशित किये जा सकेंगे।

– सम्पर्क सूत्र :– 9758747920, 9319002402

thearyasamaj.org

NDPSo on 08/09 अगस्त, 2014 वैदिक सार्वदेशिक 7 से 13 अगस्त 2014
प्रकाशन की तिथि : 7 अगस्त, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

अश्वारोही बनो

**कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।**

ऋषिः—भृगुः।। देवता—कालः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।। —अ० १९/५३/१

विनय—कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं। (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति-केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है ! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत-से सौर-मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व-ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव की मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं। भाइयो ! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है?याद रक्खो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले-सकते हैं जो ज्ञानी हैं- जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल-रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग-भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँचे सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची-विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ—सप्तरश्मिः=सात रस्सियोंवाला ! सहस्त्राक्षः=हजारों धुरों को चलाने वाला अजरः=कभी भी जीर्ण, बुड्डा न होने वाला भूरिरेताः=महाबली कालः अश्वः=समयरूपी घोड़ा वहति=चल रहा है-संसार-रथ को खींच रहा है। विश्वा भुवनानि=सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन तस्य=उसके चक्राः=चक्र हैं- उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। तम्=उस घोड़े पर विपश्चितः=ज्ञानी और कवयः=क्रान्तदर्शी लोग ही आरोहन्ति=सवार होते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पाठकों के पत्र क्या प्रतिक्रिया

सम्पादक महोदय, वैदिक सार्वदेशिक, नई दिल्ली

"वैदिक सार्वदेशिक" का 10 से 16 जुलाई, 2014 का अंक पढ़कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हुआ। "वैदिक सार्वदेशिक" दिल्ली का सम्भवतः यह पहला अंक था जिसे पढ़कर स्वाध्याय का सा सुख मिला। राजनैतिक और सामाजिक अल्प महत्त्व के तात्कालिक समस्याओं को लेकर लिखे गये लेखों से जो मन अशान्त हो जाता था, आज उससे त्राण मिला। शारीरिक सुख, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं प्राणी जगत, शांति की वर्षा, ममत्त्व-मातृत्व और सतर्कता, जल चिकित्सा एक चमत्कार जैसे लेख पढ़कर तथा प्राणाय नमोनमः जैसे वेद मन्त्रों पर व्याख्या परक लेखों को पढ़कर तन-मन-मस्तिष्क को तुष्टीकरण मिला, आशा है भविष्य में भी वैदिक सार्वदेशिक में ऐसे लेख पढ़ने को मिलेंगे। आपका स्वनामधन्य "वैदिक सार्वदेशिक" इसी प्रकार के लेखों के साथ प्रकाशित होगा जिन्हें पढ़कर आत्मा ऊर्ज्वसित होगी, मन को एकाग्रता मिलेगी तथा मस्तिष्क के लिए ज्ञान प्रकाश की किरणें बिखेरने वाले लेख पढ़ने को मिलेंगे। आशा और विश्वास है कि भविष्य में आपका "वैदिक सार्वदेशिक" इसी प्रकार आपकी संपादकीय क्षमता का विस्तार करता हुआ आपका गौरव बढ़ायेगा।

– अवधेश नारायण मिश्र, पूर्व प्राचार्य, 54/1001, शान्ति विहार, डगनिया, रायपुर (छत्तीसगढ़)–492013

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।